विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

वर्ग-दशम्

विषय-पाठ्य- सहगामी अभिक्रिया

प्रिय विद्यार्थीगण,

आज की पाठ्य सहगामी अभिक्रिया कक्षा के अंतर्गत आपको किसी भी प्रकार की गतिविधि में शामिल नहीं होना है । बस एक चिट्ठी आपके नाम लिखी जा रही है ...

:

बच्चों ,जिस तरह आपके अध्ययन को सुगठित बनाने के लिए पाठ्यपुस्तकीय अध्ययन के साथ-साथ सहगामी गतिविधि का होना आवश्यक है तथा यह दोनों चीजें आपके शिक्षा पद्धति की पूरक हैं।और, दोनों चीजें हमेशा साथ-साथ चलती हैं । ठीक उसी

प्रकार, आपके साथ या आपके पीछे हमेशा एक aura(परिमंडल /आभाचक्र) चलता है । कहते हैं -यह पूर्व जन्मों के संस्कार और वर्तमान के कर्मों से निर्मित और प्रभावित होता है । और यह हमारी जीवन-प्रक्रिया को संचालित करता है ।

चलिए ,यह तो गंभीर बातें हैं जो हो सकता है आपकी समझ में न आए । लेकिन ,एक बात जो एकदम साधारण है कि आपके हर व्यवहार चाहे वह भाषिक /मौखिक/शारीरिक हो आपके साथ चल रहे आपकी परवरिश और आपकी शिक्षा पर उठती है । और ,ध्यान रहे ,पहली उंगली आपके परवरिश की उठती है जिसमें कई चीजें शामिल हैं – माता-पिता के संस्कार ,घर का वातावरण ,आपके पालन-पोषण का उनका तरीका । दूसरी उंगली आपके शिक्षक

और शिक्षा -पद्धति पर उठती है । जहां तक हमारा मानना है कि आपके द्वारा किया गलत आचरण आपकी पूरी वंश-परंपरा को सवाल के घेरे में खड़ा करती है । लोग पलटवार में आपके पूर्वज तक को लपेट लेते हैं ।

मान लेते हैं कि हम शिक्षक आपको उम्दा शिक्षा से वंचित रखते हैं ,तो वे भर्त्सना के शिकार होते हैं (आपके अनुसार) ।

लेकिन ,आपके माता-पिता ने सामर्थ्य के अनुसार कोई कसर नहीं छोड़ी होगी ।

- ***फिर आप अपनी उद्दंडता की सजा उन्हें क्यों दिलवाते हो ?***

- ***दूसरों को अपने माता-पिता को अपमानित करने का हक़ क्यों देते हो ?***
-

  मुझे तुमसबों से मेरे इन दोनों प्रश्नों का उत्तर चाहिए ।

  इन प्रश्नों का उत्तर है तुम्हारे पास ? दे सकोगे तो दो !

  अगर हम समय रहते अपनी गलतियों के प्रति सचेत नहीं होते तो प्रकृति हमें सिखाती है ,जो ऐसी सजा होती है जिसे हर हाल भुगतनी पड़ती है । प्रकृति की सजा को आज पूरी सभ्यता भुगत रही है । हम और आप छटपटाने के सिवाय कुछ नहीं कर पा रहें हैं ।

अंत में ,बस इतना ही कहना चाहते हैं कि ऊपर की बातों पर भी अगर गौर ने करो तो कम से कम अपनी आत्मा के लिए ग्लानि मत जमा करो । जिस दिन खुद के लिए शर्मिंदगी का भाव (अपराध-बोध) उपजता है तो इसे झेलना नारकीय होता है । मत करो न ऐसा !

अंत में ,इस पाती को वहां तक भेजो जहां तक अपने वर्ग का लिंक शेयर करते हो ।

हिम्मती बनो , दुस्साहसी नहीं !

आपकी शिक्षिका